मुख्य परीक्षा

प्रश्न-1 सरोगेसी से आप क्या समझते हैं? इसके पक्ष और विपक्ष में तर्क देते हुए यह बताएं कि भारत में इसकी स्वीकार्यता को लेकर क्या विवाद हैं?

(250 शब्द, 15 अंक)

What do you mean by surrogacy? Presenting the argument in its favour and against, elucidate what are the contentions for its acceptance in India.

(250 Words, 15 Marks)

उत्तर:-1. सरोगेसी एक ऐसी नवीन व्यवस्था है जिसमें कोई भी स्त्री किसी अन्य दंपत्ति की संतान को जन्म देती है।

2. इसके अंतर्गत मुख्यत: स्त्री एवं पुरुष युगल के अण्डाणु एवं शुक्राणु को बाहर निकालकर तकनीक पद्धति इसे निषेचित किया जाता है और जीव तैयार होने के बाद किसी अन्य स्त्री (सरोगेट माता) के गर्भ में विकसित होने के लिए डाल दिया जाता है।

3. सरोगेट माता उस बच्चे को जन्म देती है, सरोगेट माता की कोख को 'किराए की कोख' भी कहा जाता है। वह स्त्री जिस युगल की संतान को जन्म देती है, उसे जैविकीय माता-पिता कहते है।

पक्ष में तर्क:-

1. निसंतान को संतान की प्राप्ति।
2. परिवार की निरंतरता कायम।
3. दंपत्ति को भावनात्मक सहारा।
4. सरोगेट माता को आर्थिक लाभ।
5. भारत में चिकित्सा पर्यटन को बढ़ावा और विदेशी मुद्रा की प्राप्ति।

विपक्ष में तर्क:-

1. सरोगेट माता एवं बच्चे के स्वास्थ्य पर खतरा।
2. महिलाओं के शोषण का नया रूप।
4. भावनाओं का व्यवसायीकरण।
5. माँ बच्चे के मध्य संबंध को लेकर समस्या।

भारत में विवाद की स्थिति:-

1. नागरिकता संबंधी विवाद।
2. सामाजिक स्वीकार्यता को लेकर विवाद की स्थिति।
3. इसकी आड़ में अनैतिक और व्यवसायीकरण की गतिविधियों को लेकर विवाद।
4. सितम्बर - 2014 में ऑस्ट्रेलिया की एक दंपत्ति द्वारा सरोगेसी से उत्पन्न जुड़वा बच्चों में से एक बच्चे को भारत में छोड़ देने से विवाद पैदा हो गया था।

प्र.2- कुछ भारतीय राज्यों में घटता लिंगानुपात, भारत के भावी सामाजिक विकास के लिए एक भयप्रद संकेत है, चर्चा कीजिए।

(250 शब्द, 15 अंक)

Declining gender ratio in some Indian state is an fearsome indication for the future social development of India. Discuss.

(250 Words, 15 Marks)

लिंगानुपातः- किसी देश की जनसंख्या की गुणवत्ता के लिए लिंग संघटन अत्यंत महत्त्वपूर्ण संकेतक है। प्राथमिक रूप से इसे लिंगानुपात के आधार पर समझा जाता है। लिंगानुपात किसी विशिष्ट समयावधि में किसी क्षेत्र विशेष में प्रति हजार पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या को संदर्भित करता है।

- भारत में लिंगानुपात में कई स्तरों पर विविधता दिखाई देती है। कुछ भारतीय राज्यों: जैसे-हरियाणा (879), जम्मू कश्मीर (889), सिक्किम (890) और पंजाब (895) में निरंतर घटता जा रहा है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार, महिलाएँ कुल जनसंख्या का मात्र 47% हैं। विश्व आर्थिक मंच द्वारा जारी ग्लोबल जेंडर गैप इंडेक्स, 2017 में 144 देशों की सूची में भारत की 108वीं रैंक है।
- निरंतर भारतीय राज्यों में घटता हुआ लिंगानुपात भारत के भावी सामाजिक विकास के लिए एक भयावह स्थिति के रूप में है। इसे निम्न बिंदुओं के अंतर्गत समझा जा सकता है-

1. घटते लिंगानुपात के कारण महिलाओं के विरूद्ध हिंसा में तेजी से वृद्धि हुई है।
2. महिलाओं के विरूद्ध हिंसा में हुई बढ़ोत्तरी से पुत्र की प्राथमिकता बढ़ गई है, क्योंकि माता-पिता यह महसूस करते हैं कि महिलाओं को सुरक्षित रख पाना मुश्किल है।
3. हरियाणा के सेंटर फॉर सोशल रिसर्च द्वारा आयोजित एक अध्ययन में यह पाया गया है कि महिलाओं के विरुद्ध होने वाली हिंसा का भय कन्या भ्रूणहत्या का एक प्रमुख कारण है।
4. महिलाओं की संख्या में कमी के कारण बहुविवाह के मामलों में वृद्धि हुई है। विधवाओं के बलपूर्वक विवाह किए जाने के मामले सामने आए हैं।
5. निर्धन क्षेत्र से महिलाओं को खरीदने की प्रथाओं के साथ-साथ महिलाओं का वस्तुकरण भी किया गया है।
6. इसका आर्थिक परिणाम यह है कि उत्पादक आबादी का एक बड़ा हिस्सा अप्रयुक्त रह जा रहा है। कई बार महिलाओं की कमी पुरुषों की कार्यदक्षता को नुकसान पहुँचाती है, जिससे पुरुषों पर काम के दबाव में वृद्धि हुई है।

इसप्रकार उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है, कि घटता लिंगानुपात भारत के भावी सामाजिक विकास के लिए एक भयप्रद संकेत है। सरकार ने 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' 'सुकन्या समृद्धि योजना' इत्यादि जैसी पहलों के माध्यम से बढ़ते लिंगानुपात की समस्या से निपटने का प्रयास किया है।

प्र.3- **धर्मनिरपेक्षता की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए भारतीय संदर्भ में इसका स्वरूप स्पष्ट कीजिए।**

(250 शब्द, 15 अंक)

Elucidating the concept of secularism, explain what the nature of it is in reference of India.

(250 Words, 15 Marks)

उत्तर:- **धर्मनिरपेक्षता:-** वह सिद्धांत या विचारधारा, जो तर्कबुद्धिवाद के प्रसार द्वारा धर्म के तार्किक एवं अवैज्ञानिक प्रभावों के उन्मूलन पर बल देता है, इसे धर्मनिरपेक्षता कहते हैं।

- भारतीय समाज में धर्मनिरपेक्षता को यूरोप के अर्थ से भिन्न एक विशिष्ट अर्थ में अपनाया गया है। जहाँ विभिन्न धर्म के लोग समानता, स्वतंत्रता एवं सहिष्णुता के साथ बिना एक-दूसरे के धार्मिक विश्वास एवं मान्यताओं में बाधा उत्पन्न किए एक राज्य का निर्माण करें, जिसका अपना कोई धर्म न हो और जिसके लिए सभी धर्म समान हों।
- आजादी के बाद इसी विशिष्ट अर्थ में भारतीय संविधान में भारत को एक धर्म निरपेक्ष राज्य घोषित किया गया, जिसके तहत भारत गणराज्य किसी विशिष्ट धर्म से संबंधित नहीं है और राज्य एवं धर्म में पृथकता विद्यमान है।

स्वरूप:-

1. भारतीय संविधान को प्रस्तावना में 'भारत' को एक धर्म निरपेक्ष राज्य घोषित किया गया है, जहाँ भारत का अपना कोई धर्म नहीं है।
2. संविधान के समक्ष सभी समान हैं। राज्य बिना किसी भेदभाव के सभी नागरिकों को समान अधिकार एवं अवसर की समानता उपलब्ध कराता है।
3. अनुच्छेद-25 के अंतर्गत सभी नागरिकों को अपने धर्म के पालन की स्वतंत्रता है।
4. राज्य किसी के धार्मिक कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करेगा (अनु.- 26, 27)।
5. राज्य द्वारा सहायता प्राप्त शिक्षण संस्थान धर्म से स्वत: पृथक् होंगे।
6. राज्य किसी धार्मिक समुदाय पर अपनी संस्कृति नहीं थोपेगा और सभी धार्मिक समूहों को अपना शिक्षण संस्थान स्थापित करने पर स्वतंत्रता होगी।

प्र.4- परंपरागत भारतीय समाज के आधारभूत लक्षणों को बताएं और यह भी बताएं की आधुनिकीकरण का परंपरागत भारतीय समाज पर क्या प्रभाव पड़ा है?

(150 शब्द, 10 अंक)

Elucidate the basic features of traditional Indian society and also explain what effects modernization has on traditional Indian society.

(150 Words, 10 Marks)

उत्तर:- भारतीय समाज एक बहुसांस्कृतिक और बहु-वैचारिक संरचनाओं के सह-अस्तित्त्व का प्रत्यक्ष प्रमाण है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' (संपूर्ण विश्व एक परिवार है) की उदार अवधारणा भारतीय समाज की एक महान सांस्कृतिक विरासत है। परम्परागत भारतीय समाज के आधारभूत लक्षणों को निम्नलिखित बिंदुओं के अंतर्गत समझा जा सकता है-

1. **विविधता में एकता:-** यह भारतीय समाज की एक मूल विशेषता है। भारत में विविधता विभिन्न स्तरों पर, विभिन्न रूपों में विद्यमान है। इस विविधता के होते हुए भी सामाजिक संस्थाओं और कार्यप्रणालियों में मूलभूत एकता विद्यमान है।
2. **बहुवर्गीय समाज:-** भारतीय समाज विभिन्न वर्गों में विभाजित है। यह विभाजन जन्म के आधार पर तथा साथ ही किसी व्यक्ति के जीवन काल के दौरान उसकी वित्तीय और सामाजिक उपलब्धियों के आधार पर भी हो सकता है।
3. **पितृसत्तात्मक समाज:-** भारतीय समाज मुख्य रूप से पितृसत्तात्मक समाज है, जिसमें पुरुषों को महिलाओं की तुलना में उच्च स्थिति प्राप्त है। हालांकि, कुछ जनजातीय समाज मातृसत्तात्मक समाज हैं, जिसमें निर्णय निर्माण में महिलाओं की भूमिका मुख्य होती है।
4. **धर्म की प्रधानता:-** परंपरागत भारतीय समाज में धर्म की प्रमुखता रही। धर्म की प्रमुखता के कारण ही व्यक्ति आध्यात्म की तरफ उन्मुख होता था। प्राचीन भारत में विविध संस्कारों का प्रचलन, अलौकिक शक्तियों के रूप में देवी-देवताओं की पूजा-पाठ और व्यक्ति का धर्म के अनुसार नियंत्रित होना, धर्म की प्रधानता को दिखाता है।
5. **पुरुषार्थ का सिद्धान्त:-** परंपरागत भारतीय समाज में चार पुरुषार्थों की स्वीकार्यता थी- धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। इसमें धर्म के अनुसार नियम का गठन और अनुशासित होना है। अर्थ के अंतर्गत जीविकोपार्जन करना है। काम के अंतर्गत व्यक्ति इन्द्रियपरक सुख प्राप्त करता है। चौथे पुरुषार्थ मोक्ष के अंतर्गत आवागमन के चक्र से मुक्ति और कैवल्य की प्राप्ति का प्रयास करता है।

- अंग्रेजों के आगमन के पश्चात् परंपरागत भारतीय समाज में आधुनिकता के मूल्यों का प्रसार एवं आधुनिकीकरण की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् आधुनिक समाज, विकसित समाज एवं समाजवादी समाज के निर्माण का लक्ष्य रखा गया है। इस दौरान होने वाले सुधारवादी आन्दोलन, लोकतांत्रिक राज्यों का उदय, औद्योगीकरण, नगरीकरण, संचार क्रांति और आधुनिक शिक्षा के प्रसार ने परंपरागत भारतीय समाज के स्वरूप में आमूल-चूल परिवर्तन कर दिया।

प्र.5- सोशल नेटवर्किंग साइट के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों को बताते हुए इसका भारतीय समाज पर क्या प्रभाव पड़ा है? चर्चा कीजिए।

(150 शब्द, 10 अंक)

Elucidating the positive and negative influence of social networking sites, explain what the effects of it are on Indian society.

(150 Words, 10 Marks)

सकारात्मक प्रभाव:-

1. स्थानीय समस्याओं का सार्वभौमीकरण
2. विभिन्न मुद्दों पर जन सहभागिता में वृद्धि।
3. दबाव समूह के रूप में क्रियाशील।
4. अलगाव एवं एकाकीपन में सहायक।
5. विचार, सूचना तथा ज्ञान की तीव्रता से फैलाव का माध्यम।

नकारात्मक प्रभाव:-

1. निजता का संकट।
2. नवीन प्रकार के अपराधों का विकास।
3. आंतरिक सुरक्षा को चुनौती।
4. समाज विरोधी सूचनाओं एवं अफवाहों का फैलना।
5. सांप्रदायिक सौहार्द्र को चुनौती।
6. अश्लीलता में वृद्धि।

निश्चित रूप से सोशल नेटवर्किंग साइट्स तकनीकीकरण एवं वैश्वीकरण की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है, जो भारतीय समाज को सकारत्मक एवं नकारात्मक दोनों रूपों में प्रभावित करती है।

चूंकि हम निरंतर आधुनिक समाज के निर्माण की ओर अग्रसर हैं, अत: इन साइट्स को रोकना उपर्युक्त नहीं है। इसलिए इसको नियंत्रित कर भारतीय संस्कृति के साथ समायोजित करके इसके नकारात्मक प्रभावों से बचा जा सकता है और इसके प्रभाव को उपयोगी बनाया जा सकता है।

GS World

प्र.6- **निम्नलिखित को परिभाषित कीजिए:**

Define the followings: **(250 Words, 15 Marks)**

(i) कुल प्रजनन दर (Total Fertility Rate) **(ii) जनघनत्व (Population Density)**

(iii) कस्बा (Town) **(iv) अतिनगरीकरण (Over Urbanization)**

(v) शिशु मृत्युदर (Infant mortality rate)

1. **कुल प्रजनन दर:-** प्रजनन दर से तात्पर्य है-ऐसे जीवित जन्म लेने वाले बच्चों की कुल संख्या, जिन्हें कोई एक स्त्री जन्म देती है। यदि वह प्रजनन आयु वर्ग की पूरी अवधि के दौरान जीवित रहती और इस आयु वर्ग के प्रत्येक खंड में औसतन उतने ही बच्चों को जन्म देती, जितने उस क्षेत्र में आयु विशिष्ट प्रजनन दरों के अनुसार होने चाहिए। दूसरे शब्दों में, सकल प्रजनन दर स्त्रियों के एक विशेष आयु वर्ग द्वारा उनकी प्रजनन आयु की अवधि के अंत तक पैदा किए गए बच्चों की औसत संख्या के बराबर होती है।

2. **जनघनत्व:-** जनसंख्या घनत्व को प्रति इकाई क्षेत्र में व्यक्तियों की संख्या के रूप में अभिव्यक्त किया जाता है। यह किसी क्षेत्र विशेष के सन्दर्भ में जनसंख्या के स्थानिक वितरण की बेहतर समझ विकसित करने में सहायता करता है। कुल जनसंख्या की तुलना में जनघनत्व किसी क्षेत्र की बेहतर तस्वीर प्रस्तुत करता है। विशेषकर उस स्थिति में जब जनसंख्या असमान रूप से वितरित है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत का जनसंख्या घनत्व 382 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी है।

3. **कस्बा:-** 1961 की जनगणना में 'कस्बा' (टाउन) को परिभाषित किया गया। इस हेतु अनिवार्य शर्तें-
   1. 5000 की न्यूनतम जनसंख्या।
   2. जनसंख्या घनत्व कम से कम 1000 व्यक्ति प्रति वर्ग मील।
   3. कार्यशील जनसंख्या का तीन-चौथाई भाग गैर-कृषि कार्यों में संलग्न।
   4. इस क्षेत्र में नगरों की कुछ विशेषताएँ तथा सुविधाएँ अवश्य हों, जैसे- औद्योगिक क्षेत्र, आवासीय बस्तियाँ।

4. **अति नगरीकरण:-** यह किसी नगर में या इसके आस-पास के ग्रामीण क्षेत्रों में नगरीकरण की विशेषताओं के अत्यधिक विस्तार को संदर्भित करता है। यह नगरीय विशिष्टताओं के अत्यधिक विकास का परिणाम है। नगरीय गतिविधियों और व्यवसायों के दायरे में विस्तार को ही अति-नगरीकरण की संज्ञा दी जाती है। मुंबई और कोलकाता ऐसे नगरों के प्रमुख उदाहरण हैं।

5. **शिशु मृत्यु दर:-** जनसांख्यिकी में उन सभी बच्चों को शिशु के रूप में परिभाषित किया गया है, जो अपने जीवनकाल के प्रथम वर्ष में हैं अर्थात् जिनकी आयु एक वर्ष से कम है। भारत जैसे देशों में जहाँ स्वास्थ्य स्थितियाँ निम्नस्तरीय हैं, कुल मृत्युओं में शिशु मृत्यु का योगदान अधिक है। इसीलिए प्राय: शिशु मृत्यु दर का उपयोग किसी देश की सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथा जीवन की गुणवत्ता के निर्धारण के एक संकेतक के रूप में किया जाता है। वर्ष 2016 में शिशु मृत्यु दर प्रति 1000 जीवित जन्म दर पर 34 हो गई थी।